SPECIAL

भगवान श्री कल्कि

श्री हनुमान जी

श्री कल्कि बाल वाटिका

मासिक पत्रिका

मां वैष्णवी

गुरूदेव लक्ष्मीनारायण जी

अंक 3 कुल पृष्ठ,16 मूल्य 10 रू वर्ष 2013

कुछ तो लोग कहेंगे लोगों का काम है कहना

आभार : रश्मि गुप्ता

कल्कि जी की स्वप्नानुभवलीला

कल्कि : एक अदभुत अनुभूति

31 मार्च 2013 : बाल वाटिका उदभव स्थली चांदनी चौक

कल्कि जी की मूर्ति स्थापनाएं क्यों ?

मुक्तेश्वर में कल्कि जी की मूर्ति स्थापना

डबल मारकेश की ग्रह से बचाया

श्री कल्कि बाल वाटिका संस्कार रोपण कार्यशालाएं

दिल्ली विश्वविद्यालय	24 मार्च
पटपडगंज	17 मार्च
यमुना विहार	10 मार्च
पंजाबी बाग	24 मार्च
गगन विहार	17 मार्च
महावीर नगर	17 मार्च
मॉडल बस्ती	10 मार्च
नोएडा	10 मार्च

कच्चे लोभ-अभिमान का दमन करते हुए, श्री हनुमानजी-ठाकुर-कल्किजी की कृपा से अबकी बार कलियुग की कुचालों को रौंदते हुए

नारदजी की भूमिका में ढाई वर्ष का बालक श्रेय गुप्ता

बढ़ते ही चलो कल्कि नाम बोल के—गुरुजी

मेरा हर बच्चा योगेश जैसा काम करेगा

योगेश ने अपने साथियों से समन्वय करते हुए कलियुग का एक किला फतह किया-5/1/2013

कल्कि परिवार की सदस्याओं द्वारा दशावतार की प्रस्तुति

आभार

मामाजी, मौसाजी, नानाजी, दादाजी, अंकल जी (श्री ओम प्रकाश गुप्ता जी)के मार्गदर्शन में, जिन्होंने भगवान श्री कल्कि एवं गुरूवर लक्ष्मीनारायण जी के आशीर्वाद से आज से 25 साल पहले सन 1989 में श्री कल्कि बाल वाटिका की फुलवारी का शुभारंभ संस्कार रोपण व भगवान श्री कल्कि के प्राकृट्य का उद्देश्य लेकर किया था। वह फुलवारी आज एक उपवन के रूप में फल फूल रही है। श्री कल्कि बाल वाटिका को उन्होंने श्री गुरू जी से मिले सच्चे सिद्धांतां संस्कारों एवं श्री कल्कि भगवान से समय समय पर मिले स्वपन, जागृत, वाणी अनुभवों द्वारा सींचा।

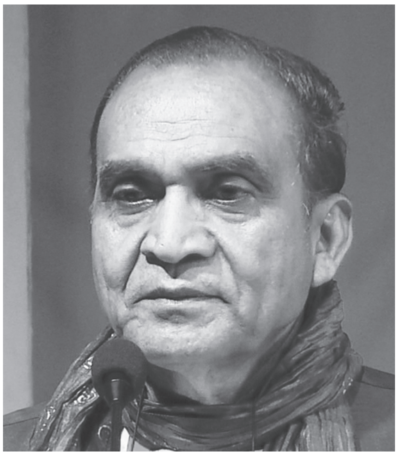

मामाजी

अरबों लोगों की जनसंख्या वाली इस पृथ्वी पर भारतवर्ष की कर्मभूमि पर उन्होंनं हमें जीवन में पूरा करने के लिए एक जीवंत उद्देश्य दिया। कलियुग के युगावतार भगवान श्री कल्कि की नवधा भक्ति द्वारा, भगवान श्री कल्कि को प्रगट करके सत्युग की स्थापना का यह सच्चा लक्ष्य हम में रोपित करके उन्होंने हमें भगवान श्री कल्कि की सेना का लोक परलोक में अमर कर देने वाला वैभवशाली सिपाही बनाया।

अतः यह नमन है कल्कि जी के उस सच्चे सैनिक को जिन्होंने एक गुरू की भांति हमारा मार्ग प्रशस्त तो किया पर कभी गुरू बनने की शुरू से ही सपने में भी नहीं सोची, एक रूपए दो बताशे द्वारा श्री हनुमान जी को ही गुरू बनवाया। एक ऐसी पवित्र आत्मा को जिन्होंने एक साधारण भक्त की भांति हमें आगे बढ़ाकर स्वयं पीछे रहकर श्री कल्कि को सपरिवार सुखी भाव से वैभवतापूर्वक पाने का रास्ता दिखाया। उन्होंने हमें श्री कल्कि जी की सिर्फ एक बार की असरदार पारसमणि तो अवश्य दी पर उसी के साथ पारसमणि बनाने की तकनीक भी समझाई।

कल्कि परिदृश्य के द्वारा श्री कल्कि बाल वाटिका (समस्त) हार्दिक धन्यवाद करते हैं अपने मामाजी, मौसाजी, नानाजी का जिन्होंने एक कुशल वैद्य की तरह कड़वे लेकिन सच्चे सिद्धांतो को लगातार हमें निष्ठुर व निर्मम होकर इस तरह पिलाया कि आज कलियुगी चापलूसों की षडयंत्रकारी नीतियाँ श्री कल्कि को प्रगट करने के हमारे उद्देश्य में हमें डिगा न पाएं।

GRATITUDE

Under the pionnership of Sh. Om Prakash Gupta who, upon the blessings of Lord Shri Kalki and Guruvar Laxmi Narayan Ji, muted and floated Shri. Kalki Bal Vatika 25 years back in 1989, the Organisation which started as a small bud is today's blossomed flower, the organisation flourished all along the years through his Golden nuggets of wisdom.

Amongst the billions of people on earth he gave us the most powerful and larger than life purpose to serve, to attain and to the very meaning of Lord Kalki, the purpose to bring the reign of Satyug, to bring Lord on earth and perish Kali, is passed to us by him. He made us Lord Kalki's soldiers, so this perfect salute is to this warrior of Lord Kalki, to that person who in real senses is guru for us but never preferred to be called so, rather he always wants himself as to be seen as follower and not guru, this is where his simplicity, his enlightened pristine soul can be seen.

So the Gala event "KALKI" is soulful thanks , tribute and recognition from all the Shri Kalki Bal Vatika's to their Mausaji, Mamaji, Nanaji i.e, Shri O.P.Gupta, for his benevolent and relentless effort to introduce to us and believe, what we are going to perform i.e. "KALKI".

आओ बताएं आज तुम्हें कल्कि जी की स्वप्नानुभव लीला कैसी होती है

—श्री योगेश गुप्ता

युगावतार भगवान श्री कल्कि की लीला पर आधारित दो दिवसीय महा समागम कल्कि जो 5 व 6 जनवरी 2013 को श्री कल्कि बाल वाटिका के सभी सदस्यों व बालक बालिकाओं द्वारा पूरी निष्ठा, लगन व मेहनत से श्री सत्य साईं ऑडोटोरियम में संपन्न हुआ, उसकी कुछ प्रमुख झलकियाँ—

KALKI VS KALIYUG

महाविष्णु श्री कल्कि की लीला पर आधारित पूरे समारोह की रूपरेखा भगवान श्री कल्कि की इच्छा व पग-पग पर उनके द्वारा दिए गए अनुभवों के बल पर ही सफलता पूर्वक संपन्न हो पाया इंसानों को तो समझाया जा सकता है पर कलि जो हवा और पानी की तरह सूक्ष्म है उसकी विकराल शक्तियों के भीषण प्रहारों से बचने का मार्ग, उससे निकलने का मार्ग साक्षात् नारायण महाविष्णु श्री कल्कि के सिवाय कोई दे ही नहीं सकता था। कलि का पूरा परिवार किसी भी हद तक जाकर, कल्कि भक्तों को गुमराह कर रहा था व दैवीय शक्तियों की मदद रोककर इस कल्कि महाप्रचार के प्रयास को जड़ से तबाह कर देना चाहता था जैसा कि एक स्वप्नानुभव के अनुसार—

कलियुगी शक्तियों ने अपनी पूरी ताकत लगाकर 12 देवी देवताओं के सुरक्षा कवच (जो कल्कि समारोह के सभी छोटे बड़े सदस्यों की मदद कर रहे थे) उसको भेद कर चार दैवी शक्तियों को शुरू में ही विमुख कर दिया था। बाकी दैवी शक्तियों को भी विमुख करवाकर मदद को बंद करवाना था और 9 विशिष्ट प्रजातियों के नागराज व नागरानी के जोड़ों द्वारा खेल खेला जा रहा था जिससे सभी सदस्यों पर अपनी षडयंत्रकारी चालों के प्रहारों से आपस में भिड़वा कर बरगला कर इस समारोह के शुरू होने से पहले ही ध्वस्त किया जा सके और भविष्य में भी कोई ऐसा न करे।

बड़े उद्देश्य के लिए कठिन प्रयास

80 सदस्यों की कार्यकारिणी समिती का समन्वय, 31 सदस्यों की प्रोफशनल कलाकारों का समन्वय व 77 बच्चे जो भाग ले रहे थे इन सभी का समन्वय एक दूसरे के साथ कल्कि जी के प्रचार कार्य के लिए के लिए होना एक अत्यंत कठिन प्रयास था क्योंकि इस कल्कि महोत्सव के माध्यम से पहली बार कलियुग की समस्त शक्तियों, उनके मायाजाल व उनके दुष्प्रभावों को बड़े ही सरल ढंग से, विस्तारपूर्वक आज की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए उजागर करने की कोशिश कर रहे थे।

आज का आधुनिक समाज जो पाश्चात्य संस्कृति में बहकर सब कुछ खो चुका है या खो रहा है उसे संभलने का एक आखिरी मौका मिल सके, यह प्रयास था संपूर्ण भक्त समुदाय के पुनर्जागरण का जिस पर कलियुग की सेना ने ऐसी मोटी परत चढ़ा दी जिसे हम देखकर भी महसूस करते हुए भी अनभिज्ञ थे और अपनी व्यस्त दैनिक दिनचर्या व जीवनशैली में इसके बारे में कुछ भी सोचने, समझने, जानने का प्रयत्न नहीं कर पाते थे भगवान श्री कल्कि से जुड़कर उनकी कृपा से, जो जीवन शेष बचा है उसे सुधारने का मौका मिले और इहलोक व परलोक दोनों सफल बनाकर महाभाग्यशाली बन सकें।

हमारे गुरूदेव रामकृष्ण परमहंस के अवतार गुरूवर लक्ष्मीनारायण जी द्वारा लिखित कुछ पंक्तियों में भी कलियुग की विकरालता का बोध हमें कराया जिससे इस समारोह में सभी तरफ से सचेत रहते हुए कलियुगी शक्तियों के प्रहारों से बचने की भरपूर कोशिशें की गईं।

कलियुग की यह भीषण आंधी नहीं ठहरने देती है
भक्तों को झटके दे देकर दुष्टजनों को सेती है

विचार जिसे कल्कि जी ने सत्य किया

पिछले चार सालों से मन में विचार आता था कि भगवान श्री कल्कि के भव्य समारोह का विशाल आयोजन हो जिसके माध्यम से श्री कल्कि की लीला का अवलोकन भजनों, नृत्य व नाटक द्वारा, विभिन्न चैनलों पर करवाकर जन-जन तक भगवान श्री कल्कि के संदेश पहुंचाए जाए और भगवान श्री कल्कि के सवा लाख भक्त शीघ्र अतिशीघ्र इकट्ठे होकर श्री कल्कि के प्राकट्य के लिए पुकार करें जैसा कि गुरूवर लक्ष्मीनारायण जी द्वारा लिखित पुस्तक में लिखा हुआ है। भगवान श्री कल्कि की कृपा से कुछ पुराणों का अध्ययन भी इस दौरान किया तो यह सार मिला कि **क्यों नहीं इस कलियुग में कल्कि का कुछ काम करें, इस कर्मभूमि पर कर्मयोनि में अपना कुछ कल्याण करें।** जिस कार्य को करने के लिए जीव का जन्म भारतवर्ष की कर्मभूमि पर मनुष्य योनि में हुआ क्या वो कार्य हमने किया, मन बहुत व्याकुल होता था कि कहीं यह जीवन व्यर्थ तो नहीं बीतता जा रहा।

कल्कि परिवार में जन्म लेना तो बहुत सौभाग्य की बात है क्योंकि हमें बताया गया था कि कल्कि वालों के यहाँ ऊंची-ऊंची आत्माएं जन्म लेती हैं जिन पर भगवान को विश्वास होता है, जिन्हें भगवान अपने विशेष कार्यों के लिए नाम, जाप, यज्ञ, हवन, प्रार्थना, पूजा, प्रचार के कार्यों के लिए, गौ विप्र धर्म के नाश से बचाने की पुकार के लिए, भूमि के भार उतारने के लिए मदद के हेतु इस धरा पर भेजते हैं और चारों युगों में अपने साथ रखते हैं।

11 जुलाई 2012 को मुझे भगवान श्री कल्कि के भव्य समारोह का

अनुभव हुआ। सोचा भगवान शायद कभी ऐसा करवाएंगे, फिलहाल ऐसा संभव नहीं था क्योंकि परिस्थितियां अनुकूल नहीं थी व चारों तरफ से परेशानियों में फंसा हुआ था।
13 अगस्त को एक प्रिय साथी से वार्तालाप के दौरान पता चला कि उसे भी भगवान श्री कल्कि का भव्य समागम का अनुभव आया है।

इंटरनेट से हुई शुरूआत

इसके उपरांत भगवान श्री कल्कि की विशेष अनुकम्पा से विचार आया क्यों नहीं दो दिवसीय भगवान श्री कल्कि के दिव्य समारोह की रूपरेखा बनाकर उसे फेसबुक पर कल्किग्रुप रियल पर डाला जाए जिससे उस पर जो 1690 कल्कि भक्त रजिस्टर्ड हैं उन सभी के समक्ष भगवान श्री कल्कि के दिव्य समारोह में कुछ काम करने का, कल्कि जी के प्रचार कार्य में सम्मिलित होने का प्रोपोजल रखा जाए, जिससे ज्यादा से ज्यादा श्री कल्कि के दिव्य भक्त स्वेच्छा से अपना नामांकन करके इसका भाग बन सकें।
16 अगस्त को भगवान श्री कल्कि, हनुमान जी महाराज व गुरूवर लक्ष्मीनारायण जी पर सब कुछ छोड़कर, उनकी कृपा व आशीर्वाद से इसका शुभारंभ किया।
फेसबुक पर सूचना के साथ साथ विभिन्न मंदिरों में पोस्टर लगाए गए व कीर्तनों में इस समारोह में नामांकन करवाने की विनती की गई, जिससे जो भी भक्त फेसबुक पर रजिस्टर्ड नहीं है, उन्हें सूचना मिल सके।

मॉडल टाऊन में हुए ऑडीशन

1.10.12 की रात तक जिन महाभाग्यशाली भक्तों ने व सदस्यों ने नामांकन करवाया था उनकी सूची 2.10.12 को फेसबुक पर जारी की गई, जिसमें 76 सदस्य कमेटी में रखे गए व 126 पार्टीसिपेंटस की सूची जारी की गई जिसके लिए 14 अक्टूबर 2012 को अग्रवाल धर्मशाला मॉडल टाऊन में ऑडीशन कराया गया। सभी प्रतियोगियों की रूचि जानते हुए उन्हें श्री गोविंद कुमार जी (म्यूजिक डायरेक्टर), श्री अपूर्व अग्रवाल जी (नृत्य निर्देशक) व श्री हेमंत अग्रवाल जी (निर्देशक) के द्वारा तीन श्रेणी में विभाजित किया गया, नृत्य, भजन, गायन व अभिनय। कलियुगी शक्तियों के भीषण प्रहारों के कारण विभिन्न बाल वाटिकाओं के 53 बच्चे उपस्थित नहीं हुए या उन्होंने अपना नाम वापिस ले लिया कि वो 3 महीने की लंबे अंतराल की रिहर्सल में नहीं आ पाएंगे।

दिव्य स्वप्नानुभव

16 अक्टूबर 2012 को सुबह 8 बजे एक प्रिय साथी का फोन आया और उन्होंने मुझे मुबारकबाद दी और अपना स्वप्नानुभव बताया कि जो भगवान श्री कल्कि का दो दिवसीय उत्सव होने जा रहा है उससे भविष्य में 28 करोड़ मनुष्य प्रभावित होंगे। यह अनुभव सुनते ही मैं सोते से जाग गया व एक गजब की शक्ति व स्फूर्ति का प्रसार मानो मेरे पूरे बदन में हो रहा था। मैंने यह अनुभव उनसे दोबारा सुना व कल्कि भगवान और सभी देवी-देवताओं, गुरुजी का हार्दिक धन्यवाद किया कि उन्होंने अपनी स्टैम्प इस प्रचार कार्य पर लगाकर इसे स्वीकार किया व सही दिशा में आगे बढ़ने का संकेत दिया इससे हमारा मनोबल कई गुना बढ़ गया।

आमंत्रण-पत्र आबंटन में बदलाव

प्रचार के आधुनिक माध्यमों के जरिए प्रोफेशनलस के द्वारा भगवान श्री कल्कि के प्रचार की नई रूपरेखा बनाई गई और यह विचार बना कि जिस चैनल से हम सीधा प्रसारण करवा रहे थे अब ऐसा नहीं किया जाए क्योंकि चैनल हमें पूरा फुटेज नहीं देंगे और जो फुटेज वो हमें देंगे उसका प्रसारण किसी दूसरे चैनल पर नहीं हो सकता। इसलिए पूरे कार्यक्रम की शूटिंग प्रोफेशनल टीम के द्वारा करवाकर अपनी डॉक्यूमेन्टरी, भजन गायन, नृत्य नाटिका की मिक्स और अनमिक्स फुटेज सभी चैनलों को देने व इसकी डी.वी.डी बनवाकर सभी शहरों में केबल ऑपरेटर्स को देने का विचार बना और इसी कारणवश कार्यकारिणी समिति के सदस्यों को सिर्फ चार आमंत्रण-पत्र दिए गए व जो बच्चे भाग ले रहे थे उन्हें दो आमंत्रण पत्र दिए गए, जिससे समारोह के दौरान कोई परेशानी न हो और पूरे अनुशासन से सारा कार्यक्रम हो सके व शूटिंग के दौरान कोई बाधा उत्पन्न न हो।

क्षमा-याचना

हम सभी कल्कि भक्तों से क्षमा मांगते हैं जिन्हें इस समारोह का निमंत्रण-पत्र प्राप्त नहीं हो पाया क्योंकि ऑडोटोरियम में सभी सीटें भरने के कारण कार्यकारिणी समिति के सदस्यों को सीढ़ियों पर बैठना पड़ा और ज्यादा होने पर इस कार्यक्रम का वीडियो शूट बुरी तरह से प्रभावित हो सकता था जो हमारे भविष्य के प्रचार कार्यों का केन्द्र बिंदु था। हम सभी सदस्यों और भक्तों को डी.वी.डी. आते ही पहुंचा देंगे व भविष्य में ऐसा ना हो इसका विशेष ध्यान रखेंगे।

माँ योगमाया के आवाहन से हुए महत्वपूर्ण बदलाव

बच्चों की रिहर्सल का कार्य श्री हनुमान मंदिर, करोडीमल कॉलेज परिसर में चल रहा था, लेकिन निर्देशक, नृत्य निर्देशक व

समिति के कुछ सदस्यों में आपसी समन्वय नहीं हो पा रहा था। एक प्रिय साथी को 4 नवंबर 2012 को स्वप्नानुभव हुआ कि हमें मां योगमाया से अपने समारोह के लिए शक्ति मांगनी है और वहाँ दर्शन करके आने हैं और श्री कल्कि समारोह के सफलतापूर्वक संपन्न होने के लिए शक्ति मांगनी है।

12 नवंबर 2012 को माँ योगमाया जी के महरौली स्थित मंदिर में कुछ साथियों द्वारा विधिवत् पूजा-अर्चना-हवन करके माँ योगमाया जी से श्री कल्कि भगवान के महाप्रचार कार्य को प्रभावशाली बनाने का व उसके मार्ग में आने वाली बाधाओं परेशानियों से बचाने की प्रार्थना की व उनसे आशीर्वाद लिया।

माँ योगमाया के मंदिर के आने के तीन दिन उपरांत ही कुछ समिति सदस्यों द्वारा डायरेक्टर/ कोरियोग्राफर बदलने का प्रस्ताव आया था जो पहले मना कर दिया गया पर कल्कि जी तो जाने क्या चाहते थे, कल्कि जी की इच्छानुसार कोरियोग्राफर व डायरेक्टर को हटा कर 1.12.2012 को श्री नदीम खान की टीम को कल्कि नाट्य मंचन की जिम्मेदारी दी गई उसमें उनके पाँच असिसटेंट डायरेक्टर, कोरियोग्राफर व चार डांसर, तीन एक्टर, लाइट डिजाइनर, सैट डिजाइनर, बैक ग्राउंड म्यूजिक कंपोजर, मेक-अप मैन, कॉस्टयूम डिजाइनर शामिल थे। आज तक श्री कल्कि बाल वाटिका व उसके सदस्यों ने इतने उच्च श्रेणी के लोगों के साथ काम नहीं किया था। इस कारण से समिति सदस्यों को आपसी समन्वय बनाने में बहुत अधिक कठिनाइयां होने लगीं।

दस नकारात्मक और एक सकारात्मक अनुभव

इसी दौरान कुछ प्रिय साथियों के अनुभवों के अनुसार समस्त कलियुगी शक्तियों ने अपने प्रहार और घातक कर दिए। एक स्वप्नानुभव के अनुसार— हनुमान मंदिर (जहाँ रिहर्सल होती थी) वहाँ लाशों के ढेर लगे हुए हैं, दूसरे स्वप्नानुभव मे एक बच्चों से भरी वैन का भयंकर एक्सीडेंट हो गया और सदस्यों को अस्पताल में जिंदगी और मौत के बीच झूलता दिखाया गया। दस नकारात्मक अनुभव आते तो एक सकारात्मक अनुभव आता। अनुभव पता चलते ही उसके उपचार तत्काल कर दिए जाते था फिर भी एक के बाद एक परेशानियां, समस्याएं और विवादों के मानो पहाड़ टूट पड़े। कई सदस्यों व बच्चों की तबियत ज्यादा खराब हो गई, वो समय पर उपस्थित नहीं हो पाए, यहाँ तक कि समारोह के दिन भी कार्यकारिणी सदस्यों व बच्चों को तेज बुखार था जिसके कारण पार्टिसिपेंटस को अंतिम क्षणों में अपना रोल तक छोड़ना पड़ा। ठंड ने भी अपना रिकॉर्ड तोड़ दिया और कोहरे के कारण कई बच्चे व सदस्य अपने घरों पर रात को 11.30 बजे पहुंचते थे अधिकतर घरों में परेशानियाँ बढ़ती जा रही थीं। सब तरफ आपसी नोंक झोंक का माहौल बना हुआ था। रिहर्सल के दौरान भी कई ऐसी विकट परिस्थितियाँ आई जो मनोबल गिराने में कोई कसर नहीं छोड़ती थीं। समझ नहीं आ रहा था इन समस्याओं को सुलझाएं या इस उत्सव की तैयारी करें।

कलियुग अपने चरम पर पहुंचा

एक समय तो कलियुगी शक्तियों ने इतना मनोबल तोड़ दिया कि लगा अब यह कार्य होना बिल्कुल असंभव है मन में यह संशय आने लगा कि भगवान श्री कल्कि का यह समारोह करने के हम लायक भी हैं या नहीं? कहीं यह कार्य शुरू करके कोई गलती तो नहीं कर दी? बरबस मुंह से यही निकलता था।

टूटे हाल हैं भक्त तुम्हारे, असुरन की आफत के मारे।
घोर विपत में पड़े बिचारे, तुम बिन उनको कौन उबारे॥
हे कल्कि भगवान, विपत के भार हटा देना।
बेड़ा पड़ा बीच मंझधार, खेवनहार कोई है नाय॥

गुरु जी और कल्कि जी ने महाप्रचार के इस अभियान में विजय दिलवाई

भगवान श्री कल्कि व सभी देवी देवताओं व शक्तियों की विशेष कृपा से सभी समिति सदस्यों, पार्टीसिपेंटस व उनके परिवार के सदस्यों द्वारा जो भी अनुभवों के उपचार, नाम-जाप-

प्रार्थनाएं प्रतिदिन नियमित रूप से पूर्ण श्रद्धा से की गईं उसी के कारण यह कल्कि भगवान का महाप्रचार का कार्य अत्यंत सफल हो पाया। भगवान श्री

कल्कि ने सभी कलियुगी शक्तियों को विध्वंस करके इस महाप्रचार की नींव डाली और उसे बड़ी वैभवता से सफल करवाया।

हम हो गए कामयाब

हम सभी सदस्य, बच्चे व उनका पूरा परिवार बहुत महाभाग्यशाली हैं कि श्री कल्कि भगवान ने अपने इस महाप्रचार के कार्य के लिए हमें चुना। प्रभु श्री कल्कि ही करन करावन हार हैं वो ही करने वाले हैं वहीं करवाने वाले हैं हम सब तो कठपुतली मात्र हैं। इस जीत के लिए कल्कि भगवान व सभी दैवी-शक्तियों का हार्दिक धन्यवाद करते हैं और उनसे आग्रह करते हैं कि भविष्य में भी पूरा कल्कि परिवार कल्कि जी के प्रचार का कार्य करते हुए अपने जीवन में आगे बढ़ते रहें। इससे भविष्य में सभी भक्त समुदायों को कल्कि भगवान से जुड़ने का सच्चा रास्ता मिलेगा।

चमत्कारी श्री कल्कि की मूर्तियाँ पिछले जन्मों के महाभाग्यवान राजा रानियों ने लगाई-लगा रहे हैं-लगाते रहेंगे

ज्वलंत प्रश्न कल्कि समाज का ?
1 ''ये श्री ओ.पी. गुप्ता जी को क्या हो गया है, जगह-जगह कल्कि जी की इतनी ज्यादा मूर्तियाँ क्यों लगा रहे है ?''
2 ''अभी कल्कि जी के इतने भक्त नहीं हैं तो इतनी मूर्तियाँ लगाने का क्या औचित्य है ?''

उत्तरः- पहले भी हमने इस प्रश्न का जवाब देने का प्रयत्न किया था कि ये कल्कि जी की मूर्तियाँ वास्तव में श्री कल्कि जी की युद्ध की छावनियाँ हैं। कलि राक्षस की पराजय की विजय-पताकाएं हैं। यह कार्य किसी व्यक्ति विशेष द्वारा हो ही नहीं सकता। कल्कि जी की कृपा से दैवी शक्तियाँ आती हैं और कार्य करवा कर चली जाती हैं।

भगवान श्री कल्कि ने अपने विशेष भक्तों को धरा पर अपने अवतार का कार्य करने के लिये भेज रहे हैं।

''क्या जाने किस लिए तुम्हारा रूप बदलकर भेजा है
कलियुग से टक्कर लेने को किसके बल पर भेजा है''
केवल कल्कि नाम न भूलो जिसके बल पर भेजा है

पहले जमाने में बड़े-बड़े धर्मात्मा राजा मन्दिर बनवाते थे, मूर्तियाँ लगवाते थे और राजा से महाराजा, फिर सम्राट बनते चले जाते थे। अनन्त काल से उनकी यश गाथा सुनी-सुनाई जा रही है, जैसे- सम्राट अशोक, राजा विक्रमादित्य आदि।

लेकिन कलियुग के राज्य में राजसी तेज वाले धर्म परायण व्यक्ति को कलियुग की राक्षसी शक्तियाँ प्रतिपल कुचलने की कोशिश कर रही हैं। किसी विशेष पुण्य के फलीभूत होने पर ही ऐसे व्यक्ति कल्कि जी की शरण में आते हैं। तब शरणागत् वत्सल हमारे कल्कि जी अपनी विशेष दैवी शक्तियों की सहायता से अपने भक्तों को ऐसे महान कार्य करने का अवसर प्रदान करते हैं ताकि **उस भक्त विशेष** को वह अटल राजसी वैभव मिलता रहे जिसका वह अधिकारी है।

पर कलियुग की विषैली हवाओं से भ्रमित हम कल्कि भक्त कई बार इन दैवी शक्तियों की सहायता प्राप्त होने पर महज अस्थाई से स्थाई-खुशहाली-चाहत-वैभवता जो मामाजी को समय-समय पर कल्कि भगवान ने अनुभवों में बताई, सदस्यों को बताने से वंचित रह जाते हैं। आलस्य, लापरवाही, और आरामपरस्ती के कारण जब दैवी शक्तियाँ चली जाती हैं और तब वह शुभ करना चाहते हैं तब अफसोस होता है, 'काश तब यह कार्य पूरा कर लेते'।

''अब पछताए होत क्या, जब चिड़िया चुग गई खेत।''

भाव-मामाजी- संयोजिका सुश्री इंदु बंसल (01132448401)

आज मामाजी के पास करीब दो हज़ार बच्चे हैं, जिन्हें मामाजी कलियुग की काली नज़र से बचाकर कल्कि जी के सहारे ऊँचा उठने की पारसमणी तैयार करने की विधि सिखा रहे हैं।

आप सिर्फ़ कल्कि जी से पूरी ईमानदारी से प्रार्थना करें, प्रभु रास्ता दें और जो उसे तुरन्त पूरा करने का प्रयत्न करें। कलियुग टकराए तो अपने को फाईन द्वारा दंडित करें।

''प्यारे साथियों आज हर साईज की कल्कि जी की मूर्ति श्री कल्कि विष्णु मन्दिर, कूण्डेवालान अजमेरी गेट नई दिल्ली में उपलब्ध है। बस मूर्ति लगाने का संकल्प कर आगे आएं- काम करें-फिर देखें असीमित रॉयल्टी वाला खाता आपका खुलेगा, निरन्तर सुख-समृद्धि प्राप्त होगी''।

यह मामाजी क्या सैंकड़ों साथियों का अजमाया हुआ सत्य रास्ता है। उदाहरणार्थ हमारे देश भारतवर्ष के विशिष्ट समृद्धिशाली संभ्रान्त बिरला परिवार के बारे में हम सभी परीचित हैं। राजस्थान के एक कस्बे पिलानी में रहने वाले बिरला परिवार के प्रथम पूर्वज, जिन्होंने बिरला खानदान को समृद्धिशाली बनाया (श्री घनश्यामदास बिरला) **वे पहले गरीब थे।** उनके गुरु गणेशी दत्त ने उनकी धर्म परायणता एवं नेक स्वभाव से प्रसन्न होकर उन्हें सैंकड़ों वर्ष तक यशस्वी एवं सम्पन्न होने का आशीर्वाद दिया और दिशा निर्देश भी दिया। गुरु ने एक शर्त रखी थी,

''जब तक तेरे परिवार के लोग करनी एवं भरनी का पालन करते रहेंगे तब तक देश के सिरमौर ही रहेंगे''

करनी एवं भरनी अर्थात निरन्तर उनके द्वारा किसी न किसी मन्दिर-धर्मशाला के निर्माण का कार्य होते रहना चाहिए। यह तो हम सभी जानते हैं कि हमारे देश के हर शहर में बिरला परिवार द्वारा बनाए गए मन्दिर स्थापित हैं। हर मन्दिर में पवित्रता एवं स्वच्छता बनाए रखने का पूरा प्रयत्न किया जाता है। इन मन्दिरों में जाते ही ईश्वरीय तत्व को हम आत्मा से महसूस करते हैं।

''क्यों न हम सभी कल्कि भक्त बिरला परिवार की मन्दिर-मूर्ति-स्थापना एवं व्यवस्था की परायणता को आदर्श मानकर चलें एवं आज युग के अवतार हमारे प्रभु कल्कि जी की पवित्र ज्योति को पूरे विश्व में प्रज्ज्वलित करने का संकल्प करें।''

आश्चर्यजनक किंतु सत्य.....महाविष्णु का भगवान श्री कल्कि ऐसा चमत्कारी अवतार जिसके प्रकट होने से पहले सिद्ध पीठों और शक्तिपीठों में मूर्तियाँ लग रही हैं और विधिवत पूजा हो रही है

कल्कि कल्प-वृक्ष

—मामाजी

मेरा काम बच्चों का हाथ नारायण श्री कल्कि के हाथ में देना है। मुझे उन्हें वास्को डिगामा की तरह कल्कि जी का सुदृढ़ सैनिक बनाना है। मुझे बच्चों के जीवन के शुरू के सिर्फ 6 वर्ष चाहिए। उसमें से भी सिर्फ प्रत्येक महीने के एक दिन के 6-7 घंटे, जिसमें उन्हें खेल-खेल में सनातन धर्म (कर्म प्रधान धर्म का ज्ञान, माता-पिता, बड़ों का सम्मान व भगवान की नवधा भक्ति) के संस्कार दिए जाते हैं। फिर बाकी के वर्षों की मुझे फिक्र नहीं।

मुझे बच्चों के हृदय की प्लेटों पर अच्छे संस्कार अंकित करने (लिखने) हैं ताकि उम्र के हिसाब से आने वाले वर्षों में कलियुग की भीषण आंधी से इस संघर्षमयी जीवन से टक्कर लेते हुए सुखी भाव से आगे ही आगे बढ़ते चले जाएं किसी भी कठिन परिस्थिति में टूटे नहीं। मुझे विवेकानंद की तरह ज्ञानी, झांसी की रानी, शिवाजी, राणा प्रताप व तांत्या टोपे आदि जैसे कल्कि जी के अर्जुन बनाने हैं साधु या संन्यासी नहीं। समाज के अभिन्न अंग बनाने हैं विद्रोही नहीं।

शादी मंडप पर जाने से पहले मैंने मामाजी को फोन किया कि 29 वर्षों में मैंने अपने परिवार के किसी मैंबर की डाँट नहीं खाई जितनी डाँटे आपकी सहीं और खाईं। आज उन्हीं डाँटों की बदौलत मैं शादी के मंडप में जा रही हूँ – श्रुति सर्राफ-कोलकाता

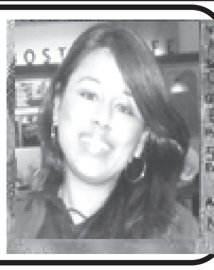

प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी असरोही में श्री कल्कि महोत्सव 3 व 4 अप्रैल 2013 को मनाया जा रहा है। सभी कल्कि भक्त आमंत्रित हैं। प्रेषक— पं. रमेश मिश्रा, पं. कमलेश मिश्रा

यू एस बी टू इन वन एंप्लीफायर एम यू 25

अब पैन ड्राइव चलाने के साथ भजन गाने की सुविधा के साथ बना यू एस बी टू इन वन एंप्लीफायर एम यू 25 मात्र –1650 रु में माईक अलग क्वालिटी के अनुसार

पैन ड्राइव फ्री

शोक-संदेश

मेरी मौसेरी बहन कल्कि भक्ता स्वर्गीय श्रीमती सीता गुप्ता के युवा पुत्र श्री धीरज गुप्ता के आकस्मिक (दर्दनाक) निधन पर समस्त श्री कल्कि बाल वाटिका परिवार एवं मौनी मामा शोक संतप्त हैं। भगवान श्री कल्कि से प्रार्थना करते हैं कि उनके परिवार को दुख से बाहर निकालने की शक्ति एवं स्वर्गीय धीरज को उत्तम गति प्रदान करें।

मामाजी को पहले मिली निम्न डिग्रीयां

* मामाजी के भाव अच्छे हैं, परंतु बोल अच्छे नहीं,
* मामाजी के शब्द अनगढ़ या तराशे हुए नहीं है,
* मामाजी कल्कि का नाम लेकर स्वप्नअनुभवों के अर्थों से डराते हैं,

आदि के बाद अब और नई दो डिग्रीयों से नवाजा गया

*** चिमटा मार बाबा**
*** मौनी मामा**

कल्कि 5-6 जनवरी 2013 के कुछ यादगार दृश्य

अरबों करोड़ों पति स्वागत समिति के सदस्य तत्परता से कार्य संभालते हुए

मंच पर कार्यकारिणी समिति के सदस्यों द्वारा कार्यक्रम की शुरूआत कलियुग की छाती पर पैर रखकर मामाजी स्वप्नानुभव पुस्तिका का विमोचन करते हुए

छोटे छोटे बालक बालिकाओं की नन्हीं पौध द्वारा भगवान श्री कल्कि के भजनों का मनमोहक प्रस्तुतीकरण

कल्कि मंच पर नन्हीं पौध का कमाल : सरस्वती वंदना, जहाँ पे कल्कि नाम उदय हो उस भूमि को लाख प्रणाम, जो सुमरनी संभाल कर बैठे दया उन पर दयाल कर बैठे, रट लो भाइयों कल्कि नाम इससे बनेंगे बिगड़े काम भजनों का अदभुत प्रस्तुतीकरण

अबके नहीं तबकों ने भी दो दिवसीय कार्यक्रम में भजन प्रस्तुत किए

आओ देखें डायरेक्टर कैसे सिनेमा में हीरो हीरोइन को रूप देता है मंच पर आने से पहले बालक व बालिकाएं मेकअप रूम में

गणेश वंदना, एवं इन्द्र सभा में नारद जी व गुरू बृहस्पति द्वारा कलियुग व उसके लक्षणों का विवरण

तुम कल्कि सुमिरन प्रतिदिन मन लगाकर करो फिर कल्कि से मैं तुम्हें वो दिलवाऊंगा जो तुम चाहते हो

कलियुग अपने विकराल रूप में उससे है तुम्हारी टक्कर जिसके आगे रावण कंस तो बहुत ही बौने हैं

पृथ्वी द्वारा ब्रह्मा जी के पास अपनी करूण पुकार लेकर पहुंचना और फिर समस्त देवी देवताओं सहित वैकुण्ठ में विष्णु जी व लक्ष्मी जी के पास पुकार लेकर जाना

दशावतार : भगवान विष्णु के दस अवतारों के नृत्य प्रस्तुतीकरण से कल्कि बाल वाटिका की सदस्याओं ने दर्शकों का मन मोह लिया

दर्शक दीर्घा में मंत्रमुग्ध दर्शकगण

उर्वि गुप्ता दुर्गा के रूप में

उत्सव शुरू होने से पहले हम होंगे कामयाब का मंत्र फूंकते हुए भगवान श्री कल्कि द्वारा प्रदान बारह देवी-देवताओं के सुरक्षा कवच का संकल्प दिलवाते हुए मामाजी

कल्कि : एक अद्‌भुत अनुभूति

—सुश्री साक्षी गुप्ता

कल्पना से परे एक अहसास

श्री कल्कि बाल वाटिका द्वारा आयोजित दो दिवसीय **कल्कि** महासमागम इतना अद्‌भुत, और प्रभावशाली था कि उसका अहसास भूलाए नहीं भूलता। इसके माध्यम से कलियुग में कल्कि जी की आवश्यकता की विस्तृत जानकारी का इतनी सरलता और सुंदरता से वर्णन किया गया कि वह मेरी कल्पना से परे था।

2 अक्टूबर 2012 को समारोह के प्रथम चरण की शुरूआत हुई और 6 जनवरी 2013 यह संपन्न हुआ, इन तीन महीनों में कलियुग ने अपना विकराल रूप दिखाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। लेकिन सभी कार्यकारिणी समिति के सदस्यों और छोटे-बड़े बालक व बालिकाओं ने मिल जुल कर एक संयुक्त परिवार (joint family) की तरह पूरी निष्ठा, लगन और कठोर परिश्रम से अपने-अपने कर्तव्य पूरे किए और अपना पूरा समय और योगदान दिया। कुछ छुपी हुई प्रतिभाएं भी उभर कर सामने आईं। अलका दीदी, अंकुर भैया, मेघा दीदी, राकेश जीजाजी, दीपक जी, पूजा दीदी, रश्मि दीदी, राहुल भैया, मीनाक्षी दीदी, नलिनी दीदी, रेनू दीदी आदि ने जिस प्रकार पूरे समारोह की तैयारियों में सबने बढ़ चढ़ कर भाग लिया वह सदा स्मरणीय रहेगा।

एक संयुक्त परिवार की तरह कार्य किया

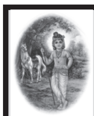

कल्कि जी के बारे में नया बहुत कुछ जाना

मैं 10 साल से श्री कल्कि बाल वाटिका की सदस्या हूँ। पर पहली बार मुझे इस समारोह के द्वारा पूरी तरह जुड़ने का मौका मिला। क्योंकि मैं कार्यकारिणी समिति के उच्च पद पर थी, इसी कारण मुझे सभी सदस्यों की भांति अपनी जिम्मेदारी और कर्तव्यों का अहसास होता था।

शुरूआत में तो मेरा ध्येय केवल अपने पति (श्री योगेश गुप्ता) के साथ कल्कि भगवान के इस महाप्रचार के कार्य में कंधे से कंधा मिलाकर खड़ा होना भर था। लेकिन धीरे धीरे कल्कि भगवान की कृपा से मेरी रूचि बढ़ती चली गई और कल्कि जी के बारे में मुझे बहुत कुछ नया जानने का मौका मिला।

इस पूरे समारोह का आयोजन बहुत रोचक था चाहे ऑडीशन हो, रिहर्सल हो या मोका रेस्टोरेंट में कॉफी पीते हुए कार्यकारिणी समिति के साथ विभिन्न डायरेक्टर, कोरियोग्राफर का इंटरव्यू का लेना हो। ऐसा प्रतीत होता था जैसे किसी लड़की के विवाह की तैयारी हो रही हो।

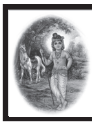

मोका की कॉफी से उत्सव की तैयारी तक

हनुमान मंदिर किरोड़ीमल कॉलेज परिसर की पहली मंजिल हमें पंचतारा (five star) घर की तरह लगने लगी थी, जहाँ रोज उत्सव का सा माहौल रहता था। कभी किसी का जन्मदिन या किसी सदस्य की शादी की सालगिरह जो पूरे ग्रुप के साथ इकट्ठे मनाई जाती थी। माँ अन्नपूर्णा की तो विशेष कृपा बरसती थी।

कल्कि : संस्कार रोपण का एक अद्‌भुत उदाहरण

छोटे-छोटे बालक-बालिकाओं की नई पीढ़ी के नृत्य व भजनों को देख सुनकर ऐसा प्रतीत हुआ कि श्री कल्कि बाल वाटिका की नन्ही पौध अब वृक्ष रूप में तैयार होने को है। **श्री कल्कि बाल वाटिका इस दो दिवसीय कार्यक्रम के द्वारा सत्संग, संकीर्तन व संस्कार अपने इस उद्देश्य को जन साधारण तक पहुंचाने में कामयाब रही कि कांवेंट एजूकेशन के साथ साथ संस्कार रोपण द्वारा आध्यात्मिक जड़े किस तरह मजबूत हो सकती है। यह महासमागम इसका अद्‌भुत उदाहरण था।** इस पूरे उत्सव में सबसे छोटे ढाई वर्ष के बालक ने नारद जी का रोल किया और सबका मन मोह लिया। **जिस किसी ने भी यह कार्यक्रम कल्कि देखा अधिकांश ने कहा कि सही मायने में अब हम कल्कि जी को जान पाए हैं।** कई मार्डन विचारों वाली अपनी सखियों से भी यह कांप्लीमेंट सुनकर मुझे बहुत अच्छा लगा।

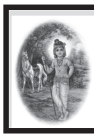

महाभाग्यशाली बनने का अवसर मिला

मैं अपने आपको महाभाग्यशाली मानती हूँ कि कल्कि भगवान की विशेष कृपा से मुझे उनके इस महाप्रचार के कार्य में जुड़ने का सुनहरा मौका दिया और भगवान श्री कल्कि की ऐसी विशेष कृपा मुझ पर व पूरे कल्कि परिवार पर सदैव बनाए रखें।

कल्कि 5-6 जनवरी : दर्शकों की प्रतिक्रियाएं

अजय गुप्ता एवं हनी गुप्ता— हमारे मन मस्तिष्क पर इस कार्यक्रम का अमिट प्रभाव पड़ा है। हमें विश्वास हो गया है कि ऐसे दृढ़ संकल्प से कल्कि भगवान अवश्य प्रगट होंगे।

शोभा गुप्ता— दशावतार प्रस्तुति बहुत सुंदर थी। नारद, कलियुग और गुरुजी का किरदार मुझे बहुत अच्छा लगा।

रोहित गुप्ता— जैसी आशा थी योगेश जी ने बहुत सुंदर और सफल प्रयास किया है। अगले कार्यक्रम के लिए मेरी शुभकामनाएं स्वीकार करें।

नलिनी गुप्ता— यह कार्यक्रम बहुत ही बढ़िया था। मैं तो यह सोच रही हूँ कि अब इससे सुंदर कैसा और कब होगा?

सताक्षी गुप्ता— मैंने इस कार्यक्रम में भाग लिया था। मेरे लिए यहाँ रिहर्सल पर रोज आना यादगार पल रहेगा। हमने यहाँ बहुत सारे नए दोस्त बनाए और सभी बाल वाटिका के बच्चों से मिलने का अवसर मिला।

अर्पित गोयल— मैं इस कार्यक्रम को कभी भूल नहीं पाऊंगा। मैंने नाटक में इन्द्र का अभिनय किया था। मेरे लिए यह दो महीने यादगार हैं। इस इवेंट से भगवान श्री कल्कि के प्रचार कार्य आगे तेज गति से बढ़ेंगें।

प्रेमलता शेखावत— पाश्चात्य सभ्यता के अवगुण और भारतीय संस्कृति और संस्कार का गौरव दर्शाने वाला यह कार्यक्रम निश्चित ही नई पीढ़ी को रास्ता देगा।

पूजा शेखावत— अद्भुत, न भूलने वाला यह कार्यक्रम मेरे जीवन में बहुत से बदलाव लेकर आया। मुझे मेरे जीवन का नया लक्ष्य मिल गया है वो है कल्किजी के सच्चे सैनिक बनकर उनकी भक्ति व प्रचार के कार्य करते हुए आगे बढ़ना।

डेजी गुप्ता— इस कार्यक्रम में आना मेरे लिए अचानक हुआ जिसके लिए मैं कल्कि जी की आभारी हूँ। प्रभु श्री कल्कि तो मेरे मन में ऐसे समा गए हैं मानो मेरे जीवन की सभी समस्याओं से निकलने का समय अब आ गया है।

राकेश गर्ग— कलियुग में आज बहुत कुछ गलत सच्चे आदमी के साथ हो रहा है लेकिन इस कार्यक्रम को देखकर यह समझ आया कि सच्चा आदमी कितनी बुराइयों या बुरे आदमियों से लड़ेगा इससे अच्छा है भगवान श्री कल्कि की पुकार करे जिससे प्रभु शीघ्र अति शीघ्र प्रगट होंगे।

निशी गर्ग— मैंने इस कार्यक्रम से यह सीखा कि हमें कभी भी झूठी शान में नहीं जीना चाहिए बल्कि कल्कि जी की भक्ति व कार्य करते हुए अपने जीवन को सार्थक बनाना चाहिए।

ऋचा गर्ग— हमें क्रोध, हिंसा, लालच आदि कलियुग के परिवार के सदस्यों से दूर रहना चाहिए।

नेहा मित्तल— जब बुरी घटना हमारे जीवन में घटती है तो वह साक्षात कलियुग का प्रतीक होता है ऐसे में कल्कि जी का नाम जाप हमारे जीवन में सहारा बनकर हमें उबारता है। इस कार्यक्रम को देखना मेरे लिए सौभाग्य की बात है।

निखिल मित्तल— हमारे जीवन में भगवान को मानना अति आवश्यक है क्योंकि प्रभु की इच्छा से परे कुछ भी नहीं है।

संगीता गर्ग— यह दो दिवसीय कार्यक्रम देखकर कल्कि जी के बारे में जानने की जिज्ञासा को पूर्णता मिली है दूसरे शब्दों में कहूँ तो यह कार्यक्रम कल्कि भगवान के स्वरूप को समझाने में पूर्णरूपेण सक्षम है।

सुनील गर्ग— बहुत खूबसूरत! शायद शब्द भी कम हैं।

आदित्य गर्ग— बहुत ज्ञानवर्धक था। मुझे कल्कि जी के बारे में बहुत कुछ नया जानने को मिला।

रूचिका गर्ग— एक नई शुरूआत।

मनस्वी अग्रवाल— मुझे यह पता लगा कि कल्कि जी ने अवतार ले लिया है अब उनका प्रगट होना शेष है।

सूरज अग्रवाल— कल्पना से परे।

श्रेय गुप्ता— मुझे किरोड़ीमल कॉलेज के आगे से निकलते हुए याद आता है कि यहाँ दो महीने तक हमने घर जैसा आनंद लिया था। मुझे इस कार्यक्रम की रिहर्सल से लेकर हर बात रह रह कर याद आती है। मैं कितना भी बड़ा हो जाऊँ चाहे दादा या पड़दादा भी बन जाऊँ मैं कल्कि जी के हर कार्यक्रम में भाग लेना चाहता हूँ। बचपन में मैं कल्कि लीला में गणेश बना था। इस बार गुरू बृहस्पति।

महिमा गुप्ता— हमने रिहर्सल के दौरान पहली बार मैट्रो में अकेले सफर किया तो अहसास हुआ हम बड़े हो गए हैं। जीवन के प्रति नजरिया बदल गया। अब तो लगता है कि हमारे हर कार्य के पीछे कोई लक्ष्य होना ही चाहिए, जैसे इस कार्यक्रम का लक्ष्य था कल्कि भगवान के प्रचार द्वारा उनके भक्तों की पुकार हो और प्रभु शीघ्र अति शीघ्र प्रगट हों।

कृति गुप्ता— दो महीने की रिहर्सल में हम हंसे, रोए, लड़े, एक दूसरे को समझा ऐसे लगा कि सभी रंग हमने यहाँ देखे लेकिन सबका ध्येय एक ही था भगवान श्री कल्कि के कार्यक्रम की सफलता।

मीनाक्षी गुप्ता— यह दो महीने मेरे जीवन की अविस्मरणीय यादें हैं जिन्हें मैं कभी नहीं भुला पाऊंगी। कल्कि जी ने मेरे पूरे परिवार को अपने इस वैभवशाली कार्य के लिए चुना इसके

मामाजी— तुम जियो हजारों साल, साल के दिन हों पचास हजार

लिए मैं प्रभु की बहुत आभारी हूँ।

उर्वि गुप्ता— मैंने इस कार्यक्रम में बहुत सारे डांसेस में भाग लिया और अपने भाई बहनों के साथ तो मुझे बहुत मजा आया। मैं अपने बडे दीदी और भैया को एक बात बताना चाहती हूँ कि अगली बार का जो प्रोग्राम होगा उसमें बड़े बच्चों के रोल हम करेंगे इसलिए अपने लिए अगली बार का काम वो सोच लें कि क्या करना है।

शुभम गुप्ता— मैं इस बार के प्रोग्राम में गणेशजी बना था और पता है अगली बार मैं कल्किजी बनूंगा।

अलका गुप्ता— मैं कल्कि जी से प्रार्थना करती हूँ कि प्रभु शीघ्र अति शीघ्र प्रगट होकर कलियुग को सत्युग में बदलें तभी लुप्त होती भारतीय संस्कृति को बचाया जा सकता है।

अग्रता गुप्ता— मुझे यहाँ बहुत मजा आया मैंने बहुत सारे देवी देवताओं को इकट्ठे देखा मैं जानना चाहती हूँ कि कल्कि भगवान कब प्रगट होंगे ?

उपासना गोयल— हमने प्ले की रिहर्सल में नदीम सर से जो बातें और आर्ट सीखा वो एक प्रोफेशनल से सीखने के लिए हमें लाखों रूपए खर्च करने पड़ते। इस बात के लिए हम कल्कि जी के बहुत बहुत आभारी है क्योंकि हमने जो भी सीखा वो सिर्फ इसलिए कि हमारा लिंक कल्कि जी से हैं। श्री कल्कि बाल वाटिका का हर बच्चा कल्कि भगवान का सच्चा दोस्त हैं कान्हा के ग्वालों की तरह।

भगवान श्री कल्कि की आगामी मूर्ति स्थापनाओं की तिथि देखें शीघ्र

KalkiGroup(real) on face book

o अग्रोहा धाम

हम जो मैसेज पत्रिका में लिख कर निकाल देते हैं उसके अनुरूप हम करने की कोशिश करते हैं साथ ही मंदिर के नोटिस बोर्ड पर भी सूचना लगाई जाती है। फिर भी यदि आपको सूचना नहीं मिलती है तो इसके हम दोषी नहीं है। अब आप चाहें हमारी वेबसाइट से और फेस बुक से मासिक पत्रिका डाऊनलोड कर सकते हैं।

www.shrikalkibalvatika.com kalkigroup(real) on face book

आयूष को अपने नाना से 100 रु मिले उसने कुछ इस तरह इसे तीन गुल्लकों में रखा

शुभ का खजाना

5 रु शुभ की गुल्लक में इसे वह भगवान के कार्यों में लगाएगा इससे कल्कि जी से लिंक बना रहेगा

बचत
SAVINGS

10 रु बचत की गुल्लक में यह रुपया जरूरत के समय काम आएगा।

विविध खर्चे
EXPENDITURE

85 रु आयूष के विभिन्न खर्चों के लिए इससे आयूष के बैंक और जेब दोनों में रुपए रहेगा।

नैनीताल, मुक्तेश्वर में भगवान श्री कल्कि की मूर्ति स्थापना 28 अप्रैल 2013 को

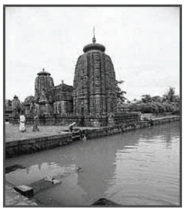

मुक्तेश्वर
नैनीताल

27 अप्रैल 2013— शाम 4 बजे दिल्ली से नैनीताल के लिए बस द्वारा प्रस्थान। बस शाह ऑडोटोरियम सिविल लाइंस से रवाना होगी।

28 अप्रैल 2013— नैनीताल में मुक्तेश्वर हिमालयन रिजोर्ट में ठहरने की व्यवस्था की गई है। रिजोर्ट से मंदिर आने जाने के लिए प्रति चार व्यक्तियों को एक गाड़ी की सुविधा उपलब्ध कराई गई है। मंदिर के अलावा कहीं और घूमने जाने की स्थिति में अबकी बार आपको स्वयं गाड़ी का अतिरिक्त किराया देय करना होगा। 28 अप्रैल 2013 को भगवान श्री कल्कि की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा होगी। रात्रि में खेल खेल में कल्कि जी के बारे में जानने के लिए रिजोर्ट में कैंप फायर का आयोजन किया जाएगा जहाँ सत्संगमयी संकीर्तन व अनुभव गोष्ठी का आनंद खुल कर ले सकते हैं।

29 अप्रैल— नैनीताल से दिल्ली के लिए बसों द्वारा प्रस्थान।

नाश्ते, दोपहर व रात के भोजन के लिए कूपन लेने की व्यवस्था उपलब्ध होगी। सिद्धपीठ मुक्तेश्वर जाने के लिए कृप्या संपर्क करें—

श्री विनय राज एडवोकेट (श्री कल्कि बाल वाटिका, चंदौसी)-9837787927 श्री मनोज पांडे (श्री कल्कि बाल वाटिका, यमुना विहार)-9212703815

प्रति व्यक्ति किराया 3500 रुपए निर्धारित हुआ हैं जिसमें रहने की व्यवस्था, खाने की व्यवस्था तथा गाड़ी द्वारा रिजोर्ट से मंदिर आने जाने की व्यवस्था शामिल है। 12 मार्च 2013 तक अपनी सीटें रिजर्व करवा लें।

कार्यक्रम:-

मुक्तेश्वर मंदिर परिसर में श्री कल्कि जी की मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा वेद पाठी आचार्यों द्वारा होगी।

28 अप्रैल— सुबह 11 बजे से 2 बजे तक **29 अप्रैल—पूजा सुबह 9 बजे से 1:30 बजे तक**

चमत्कारी श्री कल्कि जी की विंध्याचल एवं वाराणसी में प्राण प्रतिष्ठा

विंध्याचल में भगवान श्री कल्कि की प्राण प्रतिष्ठा एवं काशी वाराणसी में गंगा घाट बड़ी सीतला मां मंदिर में 13 मई 2013 को होगी। प्रस्तुत है जाने वाले 107 भक्तों की सूची (शिव गंगा ट्रेन से 10 मई शाम 6:55 पर नई दिल्ली से चलकर वाराणसी से 13 मई रात्रि 7:15 पर चलकर 14 मई प्रात: 7:40 पर नई दिल्ली पहुंचेंगे)

योगेश गुप्ता, साक्षी गुप्ता, शुभम गुप्ता, उर्वि गुप्ता, राकेश गुप्ता, मीनाक्षी गुप्ता, तनिष्क गुप्ता, सार्थक गुप्ता, दीपक गुप्ता, नलिनी गुप्ता, शुभ गुप्ता, श्रेय गुप्ता, सुभाष गुप्ता, रचना गुप्ता, सतीश गुप्ता, अरूणा गुप्ता, डा. वेद प्रकाश गुप्ता, रीता गुप्ता, सुधा गुप्ता, पीयूष गुप्ता, विपुल गुप्ता, प्रिया गुप्ता, प्रियंका गुप्ता, उदिता गुप्ता, अर्चित गुप्ता, ज्योति गुप्ता, कन्नव गुप्ता, रिया गुप्ता, रिशांक गुप्ता, काशवी गुप्ता, अजय गुप्ता, हिमांश गुप्ता, शील कुमारी गुप्ता, नमिता अग्रवाल, आनंद अग्रवाल, सुषमा अग्रवाल, सौरभ अग्रवाल, ऊषा गोयल, राजेश गुप्ता, पूजा गुप्ता, अमित जैन, निधि जैन, हेमंत अग्रवाल, रिधिमा अग्रवाल, अमोघ अग्रवाल, मेघा गोयल, मुकेश गोयल, संगीता अग्रवाल, लावण्या अग्रवाल, महिमा गुप्ता, अनिरूद्ध गुप्ता, अंकुर गोयल, शलभ गोयल, रिधि गोयल, राहुल अग्रवाल, मोना अग्रवाल, बिन्नी गोयल, राजेंद्र गुप्ता, रीता गुप्ता, दीपक गुप्ता, नेहा गुप्ता, काशवी गुप्ता, जय गुप्ता, राम प्रकाश अग्रवाल, विमला अग्रवाल, अजय अग्रवाल, नितिश कुमार, हर्ष कुमार, ओमांश, आरती अग्रवाल, संजू अग्रवाल, भावना अग्रवाल, इंदु बंसल, मनु बंसल, पूर्णिमा अग्रवाल, संगीता गर्ग, दीपक कुच्छल, आशा कुच्छल, राजुल गुप्ता, रश्मि गुप्ता, शुभम गुप्ता, सताक्षी गुप्ता, बाला गुप्ता, अलका गोयल, राकेश गुप्ता, सुषमा गुप्ता, आशा कंवर, ललित कंवर, सुनील सिंघल, इंदू सिंघल, प्रवीन कुकरेजा, बिंदु कुकरेजा, मानसी कुकरेजा, वैभव बंसल, संजय बंसल, दिनेश गर्ग, सुनीता गर्ग, हिंशिका गर्ग, नीति गुप्ता, संजय गुप्ता, मामाजी

संपर्क करें— श्री मनोज पांडे—09212703815 सुश्री रश्मि गुप्ता—09891355625

सुप्त तीर्थ जागरण अभियान

17 मार्च 2013 रविवार को संभल में मृत्यु तीर्थ में श्री कल्कि सहस्त्रनाम यज्ञ

प्रिय साथियों,

प्रति मास की भांति रविवार 17 मार्च 2013 को श्री कल्कि सहस्त्रनाम यज्ञ सुश्री इंदु बंसल, नीलम वार्ष्णेय (क्रिमिनल एडवोकेट) सुश्री अंजु रस्तोगी (पत्नी श्री अतुल रस्तोगी (एडवोकेट) मृत्यु तीर्थ में करेंगी। आप सभी श्री कल्कि सहस्त्रनाम यज्ञ में आमंत्रित हैं।

कल्कि जी ने मेरी हुबहू प्रार्थना पर ठप्पा लगाया

—मामाजी

पिछले कई वर्षों से मैं निरंतर कल्कि जी को आठ बार की नमस्कार करने के बाद अपने परिवार (योगेश, साक्षी, उर्वि, शुभम, राकेश जी, मीनाक्षी, तनिष्क, सार्थक, दीपक, नलिनी, शुभ, श्रेय) की ओर से भी भगवान कल्कि को आठ बार की नमस्कार करता था और सहपरिवार अपना कार्य लेने की व उन सबके स्वास्थय की वैभवता की प्रार्थना करता था।

श्रेय नारद के रोल में
आभार : नलिनी गुप्ता

प्यारे बच्चों, 5-6 जनवरी 2013 को मेरे जीवन में ऐसे पल आए जब श्री कल्कि रंगमंच पर सबने ही किसी न किसी रूप में कल्कि समाज को अपने अपने जीवन की अनमोल घड़ियां प्रस्तुत कीं। मैं ही क्या दर्शकों से खचाखच भरा आडोटोरियम भी रोमांचित हो गया। जब मेरा नाती (दोहता) श्रेय जिसकी उम्र ढाई साल है ने नारद की भूमिका निभाई। किरदारों से हट कर दर्शकों की निगाहें उसके अभिनय पर ही लगी रही।

आभार : साक्षी गुप्ता

मेरा हृदय गद्‌गद् उठा जब 6 वर्षीय मेरे पौत्र-शुभम गुप्ता ने निर्भीक होकर 550 दर्शकों के बीच म्यूजिशियंस को डायरेक्शन देते हुए भजन गाया
उठो भारत जगाया जा रहा है

जब बेटे पर से दोहरी मारकेश टली

—सुश्री रश्मि गुप्ता (9873345859)

मेरे बेटे को बार-बार लग रही चोटों से परेशान होकर मैंने पंडित जी को उसकी पत्री दिखाई तो उन्होंने कहा कि आपके बेटे को दोहरी मारकेश की ग्रह है। मेरे तो पैरों के नीचे से मानो जमीन ही निकल गई कि मेरे एक ही बेटा है, अब मैं कहाँ जाऊँ, किससे अपने मन की व्यथा कहूँ? मेरे पूछने पर पंडित जी ने मुझे सवा लाख जाप, हवन और कुछ दान बताए और कहा कि यह कर दो बाकी ईश्वर की इच्छा है। क्योंकि ग्रह दोहरी मारकेश की थी।

स्वप्नानुभव एक सम्पदा में से ली गई आपबीती

उन्होंने कोई ठोस आश्वासन नहीं दिया। मैं तो जैसे टूट सी गई। फिर मैंने श्री कल्कि बाल वाटिका अनुभव पैनल से बात की तो उन्होंने कहा कि इसमें घबराने की कोई बात नहीं है। भगवान श्री कल्कि ने स्वपनानुभव में बताया है कि दिन में जब समय मिले कच्चे दूध में काले तिल मिलाकर महामृत्युंजय के जाप की एक माला का यज्ञ प्रतिदिन शंकर जी की पिंडी पर चढ़ाते हुए करें (काले तिल मिले दूध को शंकर जी की पिंडी पर यह मंत्र बोलते हुए आधा चम्मच दूध इस प्रकार चढ़ाएं मानो यज्ञ कर रहे हों) और अंत में प्रार्थना करें—हे शंकर भगवान मेरे बेटे पर जो दोहरी मारकेश की ग्रह है उसे इस ग्रह से बचाकर जीवनदान दीजिए, किसी भी होने वाले अनिष्ट से उसे बचाइए, उसे कल्कि जी का काम करना है। साथियों इस क्रूर ग्रह के समय को वह सरलता से पार कर गया।

भविष्य-दर्शन — अन्तर्जगत में स्वप्नानुभव एक सम्पदा के दूसरे संस्करण का नामकरण

प्यारे बच्चों और साथियों कितने भाग्यशाली हो कि श्री हनुमान जी-ठाकुर स्वामी रामकृष्ण परमहंस-श्री कल्कि जी आपको लोक परलोक से समय समय पर अवगत करवाते रहते हैं। 5 जनवरी 2013 को **स्वप्नानुभव एक सम्पदा** ग्रंथ का विमोचन हुआ।

सुश्री मेघना गोयल (9136377829) को 8 जनवरी को एक स्वप्नानुभव में भगवान ने बताया कि स्वप्नानुभव एक सम्पदा स्वप्न-अर्थ-उपचार-प्रार्थना सहित वाली दूसरे ग्रंथ का नाम **भविष्य दर्शन** होगा। पूर्ण विवरण जनवरी 2013 के मासिक पत्रिका के अंक में पढ़ सकते हैं।

प्रस्तुत हैं **भविष्य दर्शन** में आने वाले कुछ स्वप्नानुभव जिन पर मामाजी, सुश्री सुषमा गोयल व अन्य पैनल सदस्य कार्यरत हैं—

*** दुकान का ताला खुलकर बंद * गुलाब का फूल * नजर में तीन बत्ती * सिर्फ मेरी जमानत * 21 वर्षीय लड़के की शादी मर्द के साथ * तू नहीं और सही तो मैं क्यों नहीं * मरकर भी भाषण * तुझे ही नहीं-तेरे दोस्त-रिश्तेदार को भी बचाऊंगा * मैट्रो ने पीपल की जड़ें काटी * माँ ने कहा इसे दुकान की चाबी मत देना * स्वर्गीय पिता ने स्वर्गीय माँ द्वारा रूका रुपया दिलवाया * एक नहीं दोनों अमानतें जाएंगी * मामाजी की कितनी मौतें * धनाढय परिवार में कल्कि का काम करने वालों को न बचा पाए * बड़ों के आगे थोड़े शब्द बोलकर निकल जाओ * दीपक जलाकर अंतर्जगत का मैसेज वापिस * क्षणिक अनुभव— * लेबर यूनियन * झूला झूलते हुए हाई कोर्ट में अपील स्वीकार * कल्कि जी की शक्ति का बल पूरे विश्व में फैले * पूरा विश्व जागेगा जागेगा * अणु अब परमाणु बन चुके हैं।**

नोट—जो भी कल्कि भक्त अपने स्वप्नानुभव जो उनके साथ घटित हुए हैं हमें लिख कर भेजें। इनके छपने पर कल्कि समाज को मदद और दृष्टा को सुख वैभवता मिलती है ऐसा हमने पाया है। वह बात अलग है ***मानूं मैं न मानूं***

भगवान श्री कल्कि के शुभ का खजाना

आपकी जो भी आमदनी, बिक्री (प्रतिदिन की सेल्स कम हो, मुनाफा ठीक हो तो) हो उसका 1 प्रतिशत (अर्थात् 100 रूपए में से 1 रूपया अधिकतम 100 रूपए में से 10 रू तक) भगवान श्री कल्कि के शुभ के खजाने में डालें। भगवान श्री कल्कि की पूजा, हवन करने का सारा खर्चा उस खजाने में से लें। जैसे —पोशाक, फूल, घी, जोत, प्रशाद, माला, आसन इत्यादि। भगवान श्री कल्कि के विविध कार्यों के लिए भी (साहित्य, कीर्तन, भोजन, गऊ, ब्राह्मणों, मंदिर प्रभु के कार्य के लिए धर्म के कार्यों व मंदिर जाने का किराया) इस शुभ के खजाने से लें। अपने जीवन की परेशानियों से निकलने के लिए स्वपनानुभव में यदि दैवीय अथवा पितृ शक्तियाँ आपसे कुछ भी भुगतान माँगती हैं अथवा अपनी परेशानियों से निकलने के लिए किसी भी देवी देवता के निमित्त कुछ भाग निकालना है या उन्हें प्रसाद दक्षिणा चढ़ानी है तो वह सब खर्च कल्कि जी के शुभ के खजाने से ही होगा। लेकिन ध्यान रहे भगवान श्री कल्कि ने कई बार स्वप्नानुभव द्वारा यह निर्देश दिया है कि अपने सत्संग, साहित्य एवं प्रचार का कार्य उन्हें विशेष प्रिय है। इसलिए अपने शुभ में से प्रचार एवं साहित्य के कार्य के लिए कम से कम 25 से 30 प्रतिशत रूपया अवश्य निकालें। इसके बहुत ही फलदायी परिणाम अनेक भक्तों को मिले हैं और आप को भी मिलेंगे।

सुपात्र* दाने भवते पुण्यम् पुण्य प्रभावेण करेति धर्म
धर्म प्रभावेण भवेत सुबुद्धि सदा धनाढयो पुनरेव भोगी

— *धर्म के कार्यों में रूपया लगाने से से इच्छित (मनचाहे) पुण्य की प्राप्ती होती है, पुण्य के प्रभाव से मनुष्य धर्म करता है, धर्म के प्रभाव से उस में सुबुद्धि आती है और वह सदा धनवान रहता हुआ भोगों को भोगता है।

99 रू से 90 रू तक का परिवार का खजाना इसे घर के आवश्यक खर्चे, व्यापार में पुन: लगाने के लिए, भविष्य के खर्चों के लिए, समाज सेवा में लगाने के लिए रखें। समाज सेवा के लिए स्वेच्छा से आप धन खर्च (गरीबों की मदद, अनाथालाय, अंधविद्यालय, बाढ़पीढ़ितों की मदद बीमारों, हस्पतालों, गरीब विद्यार्थियों, आदि की मदद)करके कृप्या फल की कामना न करें क्योंकि शास्त्रों में कहा गया है कि

कुपात्र* दाने भवे दरिद्री, दरिद्र प्रभावेण करोति पापम्
पाप प्रभावेण भवेत कुबुद्धि सदा दरिद्री पुनरेव रोगी

—*धर्म का रूपया समाज सेवा (गरीबों की मदद, अनाथालाय, अंधविद्यालय, बाढ़पीढ़ितों की मदद बीमारों, हस्पतालों, गरीब विद्यार्थियों, आदि की मदद) में लगाने से मनुष्य दरिद्र होता है, दरिद्रता के प्रभाव से वह पाप करता है, पाप के प्रभाव से उसमें कुबुद्धि आती है और वह सदा दरिद्र और रोगी रहता है।

अगर सामाजिक कार्यों में रूपया लगााते हुए फल की इच्छा रखी तो पशु, पक्षी योनी में जिन्हें वैभव मिलते हैं आपको भी वही वैभव मिलेंगे। जैसे कुत्ते का एयरकंडीशन कार में घूमना, तोते का सोने के पिंजरे में घर के आंगन में टंगे रहना आदि। इसलिये बन पड़े तो समाज की सहायता को दान न समझें न उसका फल चाहें।

सत्संगमयी अनुभव गोष्ठी

दिनांक : शनिवार 2 मार्च, शनिवार 4 अप्रैल 2013
स्थान : एम.के. हाउस, सी-2/8 अशोक विहार फेज-2
दीप सिनेमा के सामने, नई दिल्ली-52
समय : दोपहर 1 बजे से 5 बजे तक
संपर्क : श्री राकेश गोयल, सुश्री सुषमा गोयल
(9899698240)
सुश्री इंदू बंसल

दिनांक : शनिवार 9 मार्च, शनिवार 13 अप्रैल 2013
स्थान : सी-5/710 मिलन विहार पटपड़गंज दिल्ली-92
समय : दोपहर 1 बजे से 5 बजे तक
संपर्क : श्री सुनील गर्ग, सुश्री संगीता गर्ग
(9873349478)
सुश्री मेघना गोयल

विशेष

*** जानिए हवन विधि का सही तरीका * तनाव दूर भगाने के सरल तरीके**
*** शुभ के खजाने से उन्नति के रास्ते कैसे खुलते हैं**

अगले अंकों में...

"देवता बहुत भावुक होते हैं बोल–कबोल पूरी करनी ही पडती है"

* कच्चे लोभ को दबाने पर ही 17 वर्ष बाद कल्कि संग्रहालय का सपना सफलता के कगार पर

1

श्री कल्कि संग्रहालय टीम के सदस्य.(चित्र में)

2

* खाना तरीके से नहीं खाओगे तो औरों को भी भूल जाओगे
* दूल्हा तो घोडी चढता ही है चाहे रिश्तेदार कम आएं
* मामाजी की चाहत में कुमार विष्णु ने रंग भरा
* 17 मई को ज्ञानमयी कीर्तन की झलकियां

पिता ने कल्कि के काम के लिए बेटा दिया ...

3

* कल्कि कार्य की नई भर्ती खुली
* माटी के खिलौने को कल्कि के साथ जोडकर लोक–परलोक का सदा सुख लो
* मुझे नहीं बन पडे तो मेरी चाहत को समझो
* मेरी सब चाहत कल्कि जी ने पूरी की
* बचपन में पिता बच्चे की उंगली पकडकर चलाता है जवानी में नहीं

4

जब चित्रगुप्त ने मामाजी की शिकायत उनके मामा से की

5

शक्तियों का खेल समझो गोवा भारत का नहीं इंग्लैंड का होता अगर............

श्री कल्कि बाल वाटिका

1903/3, पहली मंजिल, चाँदनी चौक, दिल्ली–110006 सम्पर्क : 23886646, 23866661
हाउस नं. 4116, कसेरू वालान, पहाड़गंज, नई दिल्ली–55, सम्पर्क : 23587079
सी 0–2/16, राजौरी गार्डन, नई दिल्ली–110035
कॉलेज कम्पाउन्ड, गीता सोसाईटी, पालनपुर : 385001, गुजरात,: 02742–258068, 09824968440
जी 97, नेहरु कालोनी, देहरादून (उत्तरांचल), सम्पर्क : 0135–2671643, 09837343560
2 नम्बर, हाईट रोड, लिलुआ, हावड़ा–711204 (कोलकाता)
आभार/Ack. : श्री कल्कि पुराण, ऋग वेद, ऋषि प्रसाद, स्वामी राम सुखदास, नवभारत टाइम्स
योगेश प्रकाश गुप्ता, दिल्ली द्वारा प्रकाशित व अन्य बालकों के ज्ञानवर्धन हेतु
Regd. Office : 1903, 1st Floor, Chandni Chowk, Delhi-6, Tel.: 23973383

श्री कल्कि बाल वाटिका मासिक पत्रिका

के सदस्य बनने हेतु संपर्क करें—
9312533445, 9968066625, 9968314876

वार्षिक सदस्यता शुल्क : 120/– रुपए मात्र

न करने का न करवाने का झंझट बस फोन करते रहें जब तक काम पूरा न हो

मंदिरों में भगवान श्री कल्कि जी की मूर्ति, पोशाक,
लाईट प्रभारी : हर्षित गुप्ता, अंकित गड़ौदिया,
अक्षय गड़ौदिया–9999885277